अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

हिंदी के प्रचार–प्रसार में प्रवासी महिला कथाकारों का योगदान

डॉ० राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिंदी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, बी०बी० नगर,
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

ममता
शोधार्थिनी,
हिंदी विभाग,
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय,
मेरठ (उ०प्र०)

हिंदी भाषा तथा हिंदी साहित्य के प्रचार–प्रसार में प्रवासी साहित्यकारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें पुरुषों के समान ही महिलाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। महिला लेखिकाओं के लिए पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए लेखन के क्षेत्र में सक्रिय योगदान देना बहुत ही मुश्किल होता है। इसके साथ ही वे साहित्य के क्षेत्र में भी संघर्ष और चुनौतियों का सामना करती है। इन सब परिस्थितिगत परेशानियों के बाद भी स्त्री लेखन विशेषतः प्रवासी महिला–लेखन का कार्य निरन्तर प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है।

वर्तमान समय में कई महिला कथाकारों ने उच्चकोटि के साहित्य की रचना की है, जिसमें सुधा ओम ढींगरा, उषा प्रियंवदा, उषा राजे सक्सेना, ज़किया जुबैरी, पुष्पिता अवस्थी, सुषम बेदी, दिव्या माथुर, अचला शर्मा, जय वर्मा, अनीता कपूर, पूर्णिमा वर्मन, शैलजा सक्सेना, नीना पाल आदि प्रमुख है। इनकी कथाओं में प्रस्तुत अथवा अप्रस्तुत रूप में वर्तमान परिवेश की झलक, बदलते जीवन मूल्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। इन प्रवासी महिला कथाकारों ने प्रवास में उपजे दुःख–दर्द की संवेदनाएँ व्यक्त करने के साथ अपने देश की संस्कृति को भी दर्शाया है। इनके कथा साहित्य में अनुभूति, उदासी, अकेलापन, दाम्पत्य कलह, व्यक्तियों की दुर्दशा, मनुष्यों का भटकाव, संघर्ष का शिकार अबोध बच्चे, विवाह–विच्छेदन, पुनर्विवाह, सौतेले माता–पिता आदि अनेक विषयों को अपने साहित्य का विषय बनाया जो सामान्य जन के जीवन को सूक्ष्मातिसूक्ष्म चित्रण करते है।

प्रवासी लेखिकाओं के कथा साहित्य में कोरे काल्पनिक पात्रों के स्थान पर जीवन से जुड़े एवं वास्तविक जीवन के पात्रों का चुनाव किया गया। स्वान लोक पर नहीं वरन् भोगे हुए यथार्थ का चित्रण इनके कथा साहित्य में मिलता है। कादम्बरी मेहरा तथा सुषम बेदी जैसी लेखिकाओं ने घर में शोषित महिला से लेकर गे समाज जैसे विषयों को अपने लेखन में चुना। प्रवासी महिला साहित्यकारों के साहित्य में स्त्री संघर्ष, साहस, त्याग, बलिदान और प्रेम–प्रतिरोध कहा ऐसा चित्रण किया है कि पाठक अपनी सुध–बुध खो बैठता है। इनके साहित्य में प्रवास के वातावरण की खुशबू सर्वत्र विराजमान है। प्रवास की भूमि तथा जन्मभूमि के बीच उपजा द्वंद्व ही है, जो इनके साहित्य को रचनात्मकता प्रदान करता है। प्रवासी

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

साहित्य समाज को एक नयी दिशा की ओर अग्रसर करता है। प्रवासी जीवन में व्याप्त विसंगति एवं विरोधाभास के संदर्भ में **उषा राजे सक्सेना** लिखती हैं कि **''कभी व्यक्ति खुद को थाली का बैंगन समझता है, तो कभी स्वयं को धोबी का कुत्ता, न घर का न घाट का। नए परिवेश में अमिट सुखों के बीच रहते हुए भी वह पलट–पलटकर पीछे की आर देखता है, जहाँ से वह आया है।''**[1]

सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक तनाव से उत्पन्न खोखलेपन की अभिव्यक्ति भी प्रवासी कथा–साहित्य के सृजन का आधार रही है। प्रवासी महिला कथाकारों की कथाओं में स्त्रियों के चौखट से बाहर निकलने के पश्चात् वर्चस्ववादी मानसिकता तथा भारतीय एवं पाश्चात्य मूल्यों के टकराहट के उपरांत भी स्त्री अपने मानव मूल्यों की तलाश में संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। इनके साहित्य में भारतीय एवं पाश्चात्य समाज की संस्कृति, परिवेश, भाषा एवं परम्परा का मनोविज्ञान तथा मानवीय संवेदना, मानव जीवन की सहजता–असहजता के साथ ही घात–प्रतिघात को भी दर्शाया गया है।

प्रवासी हिंदी महिला कथाकारों ने अपने लेखन में विभिन्न प्रकार के सत्य को उद्घाटित किया है। प्रवासी साहित्य में व्यक्त परदेश की संस्कृति, आर्थिक स्थिति, मानवीय संबंध, नवीन जीवनशैली आदि के माध्यम से इन्होंने हिंदी साहित्य को एक नवीन मोड़ दिया है। पुरानी पीढ़ी जहाँ इन नवीन संस्कारों की पकड़ नहीं पा रही है वहीं नवीन पीढ़ी इस आधुनिकता को छोड़ नहीं पा रही है। इसी प्रकार द्वंद्व में फंसी एक पीढ़ी ऐसी भी है, जो विदेश में अपने मूल्यों तथा संस्कारों को बनाए रखने के लिए इनके प्रचार–प्रसार के प्रयत्न में लगी है। प्रवासी साहित्य की परम्परा में इन महिला साहित्यकारों का महत्वपूर्ण योगदान इसलिए भी है क्योंकि इनके यहाँ नई दुनिया की आंतरिक तथा मनोवैज्ञानिक स्थिति का आंकलन करने का नया नजरिया विराजमान है। इनकी यही रचनाशीलता प्रवासी साहित्य को भारतीय साहित्य से पृथक करती है। इनके साहित्य में जहाँ एक ओर भारतीय मूल्यों एवं संस्कारों को सहेजने का कार्य किया जाता है तो दूसरी ओर प्रवास में घटित घटना को साहित्य के माध्यम से भारत तथा भारत से इतर अन्य देशों में प्रचारित करने का कार्य होता है। इस संबंध में **डॉ० अजय नावरिया** का कहना है **''भूमंडलीकरण के कारण हिंदी के विकास के लिए बहुत सारे अवसर खुल गए हैं। आज विश्व में हिंदी की अलग पहचान है। प्रवासी साहित्य ने विश्व को एक सूत्र में बाँधने का काम किया है, जो मुख्य धारा का साहित्य है।''**[2]

प्रवासी साहित्य अपने आप में एक महत्वपूर्ण साहित्य बन चुका है, जो विदेशों के परिवेश, वहाँ की समस्याओं तथा वहाँ के वातावरण को एक दर्पण की तरह हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। **डॉ० कमलकिशोर गोयनका** प्रवासी साहित्य के संबंध में लिखते हैं कि **''प्रवासी साहित्य हमें नई संवेदनाएँ,**

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

नए परिवेश तथा नए सरोकारों से अवगत कराता है तथा एक ऐसे संसार से परिचित कराता है जो भारत में रहने वाला लेखक नहीं दे सकता।''[3]

कमल किशोर गोयनका जी का यह कथन प्रवासी महिला साहित्यकारों के संदर्भ में सटीक बैठता है। प्रवासी महिला साहित्यकारों के अथक प्रयास के कारण ही आज प्रवासी साहित्य एक विस्तृत फलक पर जा चुका है। इसी साहित्य में उन्होंने सम्पूर्ण प्रवासी जनजीवन का उद्घोष किया है। **डॉ० ज्योत्सना रघुवंशी** प्रवासी साहित्य के संबंध में लिखती हैं कि **''यद्यपि इस लेखन में प्रवास, नस्लभेद, रंग भेद, आतंक, गुंडागर्दी, औपनिवेशिकता, भ्रष्टाचार संबंधी तान–बाने, टूटते रिश्ते, बाजारवाद, वृद्धों का एकाकीपन, विस्थापन, सांस्कृतिक द्वंद्व, अंधविश्वास, सबल स्त्री रूप, त्यौहार, जन्म मृत्यु, विवाह, धार्मिक मान्यताएँ व संघर्ष, पीढ़ियों के अन्तराल व द्वंद्व आदि सैकड़ों विषयों को उकेरा जा रहा है।''**[4]

प्रवासी महिला कथाकारों का साहित्य नई गढ़ती हुई दुनिया का नया साहित्य है जो नए परिवेश में पैदा होता है। इसी कारण पाठक वर्ग वर्तमान में इससे अधिक जुड़ता चला जा रहा है। हिंदी पाठक यह समझकर प्रवासी साहित्य को पढ़ता है कि वह अनजान देशों में रहने वाले भारतीयों के जीवन के साथ ही उस देश के जीवन और समाज को भी जानना चाहता है क्योंकि जिस देश में प्रवासी भारतीय रहेगा उस देश का परिवेश जीवन–प्रणाली, संघर्ष, सरोकार आदि सभी उसके जीवन तथा सोच को प्रभावित करेगा।

भारत में छूटे उनके परिजन आज भी उन्हें याद आते है वहाँ रह कर वह अलगाव की स्थिति में जी रहे हैं। अपने देश एवं परिजनों से अलग होने का दुःख एवं पीड़ा उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देती है। जिन्हें निम्न पंक्तियों के माध्यम से समझा जा सकता है–

''चेहरा बदले, कद को तराशा, अपनापन नीलाम किया
तब जा इस बस्ती में, हम बाइज्जत कहलाए है।
यह तो सिर्फ मकॉ है लोगों का, जिसमें है अपना पड़ाव
घर तो वो था बरसों पहले, जिसे छोड़ हम आये हैं।''[5]

प्रवास में रहकर इनमें विभिन्न प्रकार का बदलाव देखा जा सकता है। अलगाव की स्थिति इतनी बढ़ गयी है कि चाहकर भी लोग एक साथ नहीं रह पा रहे हैं। काम में व्यस्त रहने के कारण बेटी अपने पिता से नाराज है जबकि पिता इसका कारण भी बता रहा है। ऐला का पिता ऐला से कहता है कि **''ऐला, मैंने जानबूझकर ऐसा कुछ नहीं किया। वे मेरे शुरू के दिन थे। संघर्ष के दिन थे, मुझे**

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

देर रात तक काम करना होता था । काम और काम के अलावा मुझे कुछ समझ में नहीं आता था।''[6] इन लेखिकाओं ने अपने साहित्य में दिखाया कि परदेश में बेटे केवल लालच के वशीभूत होकर या मजबूरीवश अपने माता–पिता को अपने पास बुला तो लेते है, परन्तु उनकी देखभाल नहीं करते हैं। यहाँ तक कि बीमार होने पर उन्हें अस्पताल के बाहर ही छोड़ कर चले जाते है। इस संबंध में **सुधा ओम ढींगरा** लिखती है– **''कई भारतीय और पाकिस्तानी अपने माँ–बाप को यहाँ बुला लेते है, पर हेल्थ इंश्योरेंस नहीं लेते हैं, माँ–बाप में से अगर कोई बीमार पड़ जाता है तो उन्हें सिटी अस्पताल में बाहर ही छोड़कर चले जाते हैं। दवा–दारु का बिल उनके नाम न पड़ जाए। इसके डर से वे उन्हें अस्पताल के अंदर छोड़ने नहीं आते।''**[7]

प्रवासी साहित्य से पुष्पिता अवस्थी ने मजदूरों की समस्याओं को उठाया है, **'छिन्नमूल'** उपन्यास में वे लिखती है कि जमींदारों के शरीर की भूख मजदूरों के पेट की भूख से ज्यादा भयानक थी। मजदूरों की बढ़ती समस्याओं ने उन्हें इतना मजबूर कर दिया कि वे हड़ताल करने पर विवश हो गए। उनकी समस्या पैसे की नहीं वरन मान–सम्मान की थी। वे लोग भी प्रतिष्ठा से जीना चाहते थे। **''यह हड़ताल सिर्फ दो पैसे के लिए नहीं वरन् यह एक इंसान के तकाजे की लड़ाई है, सभी कुछ आप लोगों पर निर्भर है। यह लड़ाई मजदूरों की प्रतिष्ठा की है।''**[8]

प्रवासी महिला कथाकारों का योगदान इस क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण है कि उन्होंने अपने साहित्य में लालच के कारण टूटते–बिखरते रिश्तों को स्थान दिया है कि लालच में मनुष्य इतना गिर जाता है कि उसे अच्छे–बुरे का भी ज्ञान नहीं रहता। **'नक्काशीदार कैबिनेट'** उपन्यास में **सुधा ओम ढींगरा** ने सोनल के माध्यम से दिखाया है कि सोनल के मामा और नाना जमीन जायदाद के लालच में उसका विवाह बलदेव जैसे धूर्त व्यक्ति से कर देते हैं जो कि लड़कियों से नशा और देह–व्यापार का धंधा करवाता है। सोनल कहती है– **''नानाजी मामाजी कोई तीर कमान में बचा हो तो चला लें। ईश्वर से दुआ करूंगी आप जैसा घटिया ननिहाल किसी को न मिल।''**[9] कादम्बरी मेहता ने अपनी कहानी में रंग–भेद की समस्या को उठाया है। वे कहती हैं कि **''पुरुष चाहे जिस रंग का हो, पत्नी उसे गोरी चाहिए। बाकी गुण चाहे जितने भी हो यदि गोरा रंग न हो तो हमारे पुरुष मुँह बिचका देते हैं।''**[10] प्रवासी महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य में नशाखोरी की समस्या को दर्शाया है। भारतीय समाज में स्त्रियों का नशीले पदार्थों का सेवन करना बुरा माना जाता है किन्तु विदेश के वातावरण में आकर लड़कियाँ इन नशीले पदार्थों का सेवन कर रही है। **दिव्या माथुर** अपने उपन्यास **'शाम भर बातें'** में लिखती है कि **''क्या जमाना आ गया है? मोहिनी बीबी, जरा बुलबुल को तो देखो। माँ–बाप के सामने सिगरिट पर सिगरिट फूँक रही है। हमें तो भई गोरियाँ भी अच्छी नहीं लगती मरी**

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सिगरिट पीती। अपनी सिल बिल्ली सी लडकियाँ अपनी छिपकली जैसी ऊँगलियों से सिगरिट दबाय सोचती हैं कि वह बडो इस्मार्ट लग रही हैं।''[11]

इसके अलावा एक ऐसा समाज भी है जहाँ कानून व्यवस्था पूर्णरूप से नष्ट हो गई है। लोगों में भय का माहौल है। भक्तजन धर्म और धंधे की राजनीति कर रहे है। चौरी और डकैती इतनी वढ़ गई है कि मंदिर जैसे संस्थान को भी हमेशा खुला नहीं छोडा जा सकता है वे भी किसी विशेष अवसर पर ही खुलते है। **पुष्पिता अवस्थी** लिखती है **''भगवान ताले के भीतर रहते है कफरियों और नीग्रो के कारण सूरीनाम में इतनी चोरी–डकैती होती है, यहाँ की कानून व्यवस्था में रामराज्य नहीं राक्षस राज्य है। लोगों ने अपने घरों और मंदिरों की खिड़कियों और दरवाजों को लोहे की सलाखों से ऐसे जकड़ रखा है कि घर और मंदिर स्वयं के बनाये हुए जेल खाने हो गये हैं।''**[12]

भारतीय लड़कियों का विवाह विदेश में बसने वाले लड़के के साथ करना गर्व की अनुभूति समझी जाती है परन्तु विवाह के पश्चात् विदेश में उनके साथ क्या हो रहा है, इस बात से उनके माता–पिता अनभिज्ञ रहते हैं। विदेश के वातावरण तथा वहाँ के कानून के बारे में उन लड़कियों को कोई जानकारी नहीं होती है और इसी बात का लड़के नाज़ायज फायदा उठाते हैं। वे इन लड़कियों से उन देशों में ड्रग्स जैसे नशीले पदार्थों का कारोबार करवाते हैं। इतना ही नहीं वे धोखे से इन्हें दूसरे देशों में ड्रग्स सप्लाई के लिए भी भेज देते है। पकड़े जाने पर कानून इन्हें कठोर से कठोर सजा देता है। इस स्थिति में वे लड़के इन लड़कियों की कोई खबर नहीं लेते हैं। वर्तमान समय में मनप्रीत जैसी कई लड़कियाँ इन जंजालों में फँसी हुई है। मनप्रीत के माध्यम से **सुधा ओम ढींगरा** कहती है **''अधिकतर लड़कियों को बाहरी दुनिया के बारे में ज्यादा कुछ पता नहीं होता। देह व्यापार से अधिक वे लाग उनसे नशे का व्यापार करवाते है। इनके द्वारा एक देश से दूसरे देश में नशा पहुंचाया जाता है। नशे उनके अंगों में भर दिए जाते हैं। अगर किसी देश में कोई लड़की पकड़ी जाती है तो उस देश का कानून उसे सजा देता है। वह उम्र भर वहाँ की जेलों में पड़ी रहती है। जिंदा होकर भी मुर्दा–सी जिंदगी जीती है।''**[13]

प्रवासी महिला साहित्यकारों ने अपने साहित्य में लिखा है कि टूटते–बिखरते रिश्तों के कारण ही आज अपनत्व की भावना, संवेदनाएँ और मान्यताएँ हमारे हाथों से निकल रहे हैं। दिखावे के लिए केवल बाह्याडम्बर ही बचा है। खालीपन, बेगानापन, अनचाहे संबंध, धोखा, जीवन में आस्था, अलगाव और एक नया प्रश्न सामने उभरता है कि क्या हमारे जीवन में केवल पैसा बचा है जो आज रिश्तों से ज्यादा महत्वपूर्ण हो गया है। भरोसे टूट रहे हैं। लोगों से किसी बात की उम्मीद करना बेकार है। मनजीत ने अपनी अमेरिका की सम्पूर्ण कमाई भाईयों को इस उम्मीद के साथ भेजी थी ताकि वह भारत जाकर वह

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

अपना बुढ़ापा अपने सगे–संबंधियों में काटे। परन्तु परिवार के लोगों से अपनी मृत्यु की बात सुनकर उसे बेहद कष्ट हुआ, वह कहता है **''दर्द नहीं, दिल टूटा है, अपनो ने तोड़ा है। टूटे दिल के टुकड़े सम्भाल नहीं पा रहा हूँ। तेरी बातों को अनसुना कर मैं सारी उम्र तुझे पराई समझता रहा और अब अंदर तड़पन है, जो सुनकर आया हूँ क्या वह सच है? जान नहीं पा रहा हूँ कि कौन–सी जमीन अपनी है।''**[14]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विगत कुछ वर्षों में हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण धारा के रूप में प्रवासी हिंदी साहित्य ने अपनी विशेष पहचान बनायी है। हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी को वैश्विक पहचान तथा सम्मान दिलाने में प्रवासी हिंदी लेखकों का योगदान अविस्मरणीय है। प्रवासी लेखकों ने हिंदी को वैश्विक पहचान दिलाने का जो बीड़ा उठाया है वह काबिलेतारीफ है। फूल की सुगन्ध के समान हिंदी विदेशों में फैल गई है। विश्व में हिंदी से जुड़े रहना कठिन कार्य है। फिर भी अनगिनत कठिनाईयों के बावजूद प्रवासी लेखक हिंदी से जुड़े रहते है। हिंदी के रचित विपुलवर्णी साहित्य में सिर्फ किस्से कहानियाँ नहीं है, यह प्रवासी भारतीयों का इतिहास है। नये समाज में उनके रचने–बसने, अनेक आशाओं–निराशाओं, संघर्षों उनके अन्तर्विरोधों, विडम्बनाओं, सफलताओं और असफलताओं की कहानी है। देश से दूर रहकर भी मातृभूमि के प्रति अपना कर्ज चुकाने के लिए इन साहित्यकारों ने हिंदी को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। विदेशी भूमि पर मौजूद सभी कथाकारों को एक सामान्य साहित्यिक मंच प्रदान करने के लिए प्रवासी साहित्यकारों ने विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन का बीड़ा उठाया। उदाहरणार्थ– न्यूजीलैण्ड से प्रकाशित भारतदर्शन पत्रिका, कनाडा से सरस्वती पत्र, लंदन से पुरवाई पत्रिका, नार्वे से स्पाइल, परिचय, शान्तिदूत पात्रिका, मॉरीशस से आर्यवीर आदि पत्रिकाएँ हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य निमित्त प्रकाशित हो रही है। इस विकासयात्रा में महिला लेखन की भूमिका सराहनीय रही है। प्रवासी साहित्य के बीजारोपण से लेकर पूर्णता पल्लवित होकर सघन वृक्ष बनने तक की यात्रा में महिला लेखकों ने कदम–कदम पर नवजात शिशु के समान इसे संरक्षण प्रदान किया है। किसी भी भाषा की महत्ता की पहचान उस भाषा में रचे गए विपुलवर्णी साहित्य से ही होती है। इस दृष्टि से प्रवासी महिला लेखिकाओं ने हिंदी भाषा के गौरव और प्रतिष्ठा में असीमित वृद्धि की है। विश्व के विभिन्न देशों में आयोजित होने वाले प्रवासी हिंदी सम्मेलनों में लगातार बढ़ते हिंदी लेखकों की भागीदारी हिंदी भाषा के बढ़ते हुए प्रमुख क्षेत्र की ओर इशारा करती है।

Volume 8, Issue 4, (Oct-Dec 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. प्रवासी हिंदी साहित्य के विविध आयाम, संपादक प्रो० प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2018, पृ०सं० 210
2. प्रवासी महिला कथाकार, डॉ० एम० फीरोज खान, सारंग प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2018, पृ०सं० 10
3. वही, पृ०सं० 12
4. प्रवासी हिंदी साहित्य : अवधारणा एवं चिंतन, संपादक प्रो० प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2018, पृ०सं० 159
5. प्रवासी हिंदी साहित्य के विविध आयाम, प्रो० प्रदीप श्रीधर, विद्या प्रकाशन, कानपुर, पृ०सं० 467
6. वह रात और अन्य कहानियाँ, उषा राजे सक्सेना, समसामयिक प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2008, पृ०सं० 96
7. दस प्रतिनिधि कहानियाँ, सुधा ओम ढींगरा, शिवना प्रकाशन, सीहोर, संस्करण 2015, पृ०सं० 29
8. छिन्नमूल, पुष्पिता अवस्थी, अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद, प्रथम संस्करण 2016, पृ०सं० 07
9. नक्काशीदार कैबिनेट, सुधा ओम ढींगरा, शिवना प्रकाशन, सीहोर, प्रथम संस्करण 2016, पृ०सं० 05
10. शाम भर बातें, दिव्या माथुर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2015, पृ०सं० 170
11. छिन्नमूल, पुष्पिता अवस्थी, अंतिमा प्रकाशन, गाजियाबाद, संस्करण 2016, पृ०सं० 207
12. गाथा अमरबेल की, सुषम बेदी, हिंदी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ०सं० 107
13. शराफत विरासत में नहीं मिलती, नीना पाल, यश पब्लिकेशन, नवीन शाहदरा, दिल्ली, संस्करण 2014, पृ०सं० 34
14. वही, पृ०सं० 34